Shyam-Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center, Bhopal (M.P.)

Model Test Papers – शरीर क्रिया विज्ञान

By- Dr. Narendra Singh Lodhi (M.D.) Mob. - 09993961427, 09300961664

(1) आयुरस्मिन् विद्यते अनेन् वा आयुर्विन्दति इति आयुर्वेदः। – यह आयुर्वेद की ..... है।
(अ) निरूक्ति (ब) व्युत्पत्ति (स) परिभाषा (द) लक्षण

(2) शालक्य तंत्र को "ऊर्ध्वांग" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(3) अगदतंत्र को "विषगर वैरोधिक प्रशमन" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(4) अगदतंत्र को "दंष्टा" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(5) रसायन तंत्र को "जरा" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भावप्रकाश

(6) आचार्य चरक ने अष्टांग आयुर्वेद के क्रम में "भूतविद्या" को किस स्थान पर रखा है।
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

(7) आचार्य सुश्रुत ने अष्टांग आयुर्वेद के क्रम में "कौमार्यभृत्य" को कौनसा स्थान दिया है।
(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) पंचम् (द) षष्टम्

(8) आचार्य वाग्भट्ट ने अष्टांग आयुर्वेद के क्रम में 'शालक्य तंत्र' को किस स्थान पर रखा है।
(अ) तृतीय (ब) चतुर्थ (स) पंचम् (द) षष्टम्

(9) दोष धातु मल मूलो हि देह। – किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(10) शक्ति रूप द्रव्य है ?
(अ) दोष (ब) धातु (स) मल (द) उपर्युक्त सभी

(11) दोषो की पांच्चभौतिकता का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शांरग्र्धर

(12) वाग्भट्टानुसार 'पित्त' का मुख्य स्थान है।
(अ) आमाशय (ब) पक्वामाशय मध्य (स) नाभि (द) उर्ध्व प्रदेश

(13) सुश्रुतानुसार 'कफ' का मुख्य स्थान है।
(अ) आमाशय (ब) उरः प्रदेश (स) नाभि (द) उर्ध्व प्रदेश

(14) 'मेधा' किस दोष का कर्म है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(15) 'वृषता' किस दोष का कर्म है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(16) दिन के अपरान्ह में किस दोष का प्रकोप होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) उपर्युक्त कोई नहीं

(17) दोष, धातु और मलों के आश्रय एवं आश्रयी भाव संबंध का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्र्धर

(18) वातशामक श्रेष्ठ रस होता है।
(अ) मधुर (ब) अम्ल (स) लवण (द) कषाय

(19) पित्तशामक श्रेष्ठ रस होता है।
(अ) मधुर (ब) तिक्त (स) लवण (द) कषाय

(20) पित्त को "मायु" की संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) ऋग्वेद (द) अर्थववेद

(21) वात को "अचिन्त्यवीर्य" किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्र्धर

(22) वात को "अमूर्त" संज्ञा किसने दी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्र्धर

(23) वाग्भट्टानुसार "मृत्स्न" किस दोष का गुण है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) अ, ब दोनों

(24) वाग्भट्टानुसार ''लघु'' किस दोष का गुण है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) अ, ब दोनों
(25) शांरग्धर के अनुसार पित्त' का प्राकृतिक रस होता है।
(अ) कटु (ब) तिक्त (स) कटु, तिक्त (द) अम्ल
(26) वैदिक ग्रंथोक्त पांच वायु में से कमूल वायु का कार्य होता है।
(अ) उदगार (ब) उन्मेष (स) जृम्भा (द) क्षुधा
(27) ''वातलाद्याः सदातुराः'' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) काश्यप
(28) ''वाताद् ऋते नास्ति रूजा।'' – किस आचार्य का कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर
(29) मन का नियत्रंण किसके द्वारा होता है।
(अ) मस्तिष्क (ब) आत्मा (स) वायु (द) ज्ञानेन्दिय
(30) 'ऊर्जा' प्रदान करती है .....वायु।
(अ) प्राण (ब) उदान (स) व्यान (द) समान
(31) 'स्मृति' प्रदान करना किस वायु का कर्म है।
(अ) प्राण (ब) उदान (स) व्यान (द) समान
(32) 'हृदय स्पंदन' करना किस वायु का कर्म है।
(अ) प्राण (ब) उदान (स) व्यान (द) समान
(33) 'पाचन' किसका कर्म है।
(अ) पाचक पित्त (ब) साधक पित्त (स) समान वायु (द) अ, स दोनों
(34) सार–किट्ट पृथक्करण किसका कार्य है।
(अ) पाचक पित्त (ब) व्यान वायु (स) समान वायु (द) अ, स दोनों
(35) चरकानुसार अपान वायु का स्थान नही है।
(अ) कटि (ब) श्रोणि (स) नितम्ब (द) उपर्युक्त सभी
(36) वाग्भट्टानुसार अपान वायु का स्थान नहीं है।
(अ) मेढ्र (ब) श्रोणि (स) उरू (द) नाभि
(37) व्यान वायु का स्थान हृदय किस आचार्य ने माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंग्धर
(38) शांरग्धर के अनुसार पाचक पित्त का स्थान होता है।
(अ) पक्वामाशय मध्य में (ब) अग्नाशय में (स) पक्वाशय में (द) ग्रहणी में
(39) रंजक पित्त का स्थान आमाशय किस आचार्य ने माना है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शांरग्धर
(40) तर्पक कफ का स्थान होता है ?
(अ) हृदय (ब) शिर (स) उरू (द) नाभि
(41) सुश्रुतानुसार 'अतिसार' किस विकृत वायुजन्य विकार है ?
(अ) उदान (ब) अपांन (स) समान (द) व्यान
(42) दौबर्ल्य मुखशोषश्च पाण्डुत्वसदनं श्रमः। – किसका लक्षण है।
(अ) रसक्षय (ब) शुक्रक्षय (स) रक्तक्षय (द) पित्तक्षय
(43) चरकानुसार ''संधिस्फुटन'' किसका लक्षण है।
(अ) मांसक्षय (ब) मेदक्षय (स) मांसक्षय, मेदक्षय (द) मज्जाक्षय
(44) ''संधिशून्यता'' किसका लक्षण है।
(अ) मांसक्षय (ब) मेदक्षय (स) मांसक्षय, मेदक्षय (द) मज्जाक्षय
(45) ''तिमिरदर्शन'' किसका लक्षण है।
(अ) मज्जाक्षय (ब) शुक्रक्षय (स) वातवृद्धि (द) वातक्षय
(46) ''प्लीह्नो वृद्धिः'' किसका लक्षण है।
(अ) मांसक्षय (ब) मेदक्षय (स) रक्तवृद्धि (द) ब, स दोनों
(47) शरीर में पित्त के अलावा और कोई अग्नि नही है किसका कथन हैं।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) भेल
(48) धातु व धात्वाग्नि एवं जठराग्नि व धात्वाग्नि के सम्बन्धो का वर्णन मिलता है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) अष्टांग हृदय (द) अष्टांग संग्रह

(49) आहार पाचक अग्नि है ?
(अ) जठराग्नि (ब) धातवाग्नि (स) दोषाग्नि (द) भूताग्नि
(50) आहारगुण पाचक अग्नि है ?
(अ) जठराग्नि (ब) धातवाग्नि (स) दोषाग्नि (द) भूताग्नि
(51) आहार पाक में अम्लपाक अवस्था कहॉ सम्पन्न होती है।
(अ) ग्रहणी (ब) आमाशय (स) पक्वाशय (द) अ, स दोनों में
(52) अच्छ पित्त का उल्लेख किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) शारंर्ग्धर
(53) आहार एवं औषध में भेद किस आचार्य ने बताया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) चक्रपाणि
(54) औषध एवं भैषज में अंतर किस आचार्य ने बताया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) चक्रपाणि
(55) आहार परिणामकर भावों का उल्लेख किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) अ, स दोनों ने
(56) कुक्षि के 4 भागों का उल्लेख किस आचार्य ने किया है।
(अ) चरक (ब) वाग्भट्ट (स) काश्यप (द) ब, स दोनों ने
(57) सुश्रुतानुसार "कृष्ण' वर्ण की वर्णोत्पत्ति में कौनसे महाभूत सहायक होते है।
(अ) तेज + पृथ्वी (ब) तेज, पृथ्वी, वायु (स) तेज + जल (द) तेज, पृथ्वी, आकाश
(58) आर्तव को अष्टम धातु किस आचार्य ने माना है।
(अ) भावप्रकाश (ब) चक्रपाणि (स) काश्यप (द) शारंर्ग्धर
(59) ओज को अष्टम धातु किस आचार्य ने माना है।
(अ) भावप्रकाश (ब) चक्रपाणि (स) काश्यप (द) शारंर्ग्धर
(60) रक्त धातु का अंजली प्रमाण होता है ?
(अ) 9 अंजली (ब) 8 अंजली (स) 4 अंजली (द) उपरोक्त कोई नहीं
(61) शागंर्धर के अनुसार 'केश, रोम' किसकी उपधातु है ?
(अ) अस्थि (ब) मज्जा (स) मेद (द) शुक्र
(62) "प्रीति" किस धातु का कर्म है।
(अ) रस धातु (ब) मज्जा धातु (स) शुक्र धातु (द) ब और स दोनों।
(63) मेद का अंजलि प्रमाण होता है।
(अ) 5 (ब) 4 (स) 2 (द) 3
(64) "शरीरपुष्टि" किस धातु का कर्म है।
(अ) रस धातु (ब) मांस धातु (स) शुक्र धातु (द) ओज
(65) "क्षीर दधि न्याय" के प्रवर्तक है।
(अ) अरूणदत्त (ब) सुश्रुत (स) दृढबल (द) भावप्रकाश
(66) एककाल धातु पोषण न्याय' के प्रवर्तक है।
(अ) अरूणदत्त (ब) सुश्रुत (स) दृढबल (द) भावप्रकाश
(67) चरकनुसार मनुष्य शरीर का प्रमाण होता है
(अ) 84 अंगुल (ब) 84 अंगुल पर्व (स) 120 अंगुल (द) 3.5 हस्त
(68) वायु एवं अग्नि का धारण करना किसका कर्म है।
(अ) पुरीष (ब) मूत्र (स) स्वेद (द) सभी का
(69) 'स्वेदस्य क्लेद विधृति।' – किसका कर्म है।
(अ) पुरीष (ब) मूत्र (स) स्वेद (द) सभी का
(70) सुश्रुतानुसार मूत्र निर्माण प्रक्रिया कहॉ आरम्भ होती है।
(अ) वृक्क में (ब) वस्ति में (स) अमाशय में (द) पक्वाशय में
(71) मानस प्रकृति की संख्या 18 किस आचार्य ने बतलायी है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) काश्यप (द) चक्रपाणि
(72) 'रोषण' किस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) वातिक (ब) पित्तज (स) कफज (द) सम
(73) 'दन्तशूका' किस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) वातिक (ब) पित्तज (स) कफज (द) सम

(74) "प्रभूताशन पाना" किस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) वातिक (ब) पित्तज (स) कफज (द) सम
(75) "आदेय वाक्यं" किस सात्विक प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) ब्रह्म सत्व (ब) ऐन्द्र सत्व (स) आर्ष सत्व (द) याम्य सत्व
(76) "असम्प्रहार्य" किस सात्विक प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) ब्रह्म सत्व (ब) ऐन्द्र सत्व (स) आर्ष सत्व (द) याम्य सत्व
(77) "अनुबन्धकोपं" किस राजस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) आसुर सत्व (ब) राक्षस सत्व (स) प्रेत सत्व (द) पिशाच सत्व
(78) "महाशन" किस राजस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) आसुर सत्व (ब) राक्षस सत्व (स) प्रेत सत्व (द) पिशाच सत्व
(79) "आहारलुब्धः" किस तामस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) पाशव सत्व (ब) मात्स्य सत्व (स) वानस्पत्य सत्व (द) कोई नहीं
(80) ओज के पर ओज एवं अपर ओज ये 2 भेद किसने बतलाए है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) सुश्रुत (द) डल्हण
(81) वातशोफ, वर्णभेद लक्षण है।
(अ) वातवृद्धि (ब) ओजविस्स्रंस (स) ओजव्यापत (द) ओजक्षय
(82) ओज का वर्ण 'श्वेत' किसने बतलाया है।
(अ) चरक (ब) चक्रपाणि (स) डल्हण (द) ब, स दोनों
(83) चरकानुसार गर्भस्थ ओज का वर्ण होता है।
(अ) सर्पिवर्ण (ब) मधुवर्ण (स) रक्तमीषत्सपीतकम् (द) श्वेत वर्ण
(84) वाग्भट्टानुसार हृदयस्थ ओज का वर्ण होता है।
(अ) रक्तमीषत्सपीतकम् (ब) ईषत् लोहितपीत (स) अश्याव रक्तपीतकम् (द) सर्पिवर्ण
(85) "महत्" किसका पर्याय है।
(अ) वायु का (ब) मन का (स) हृदय का (द) आत्मा का
(86) सुश्रुतानुसार हृदय का प्रमाण होता है।
(अ) स्वपाणितल कुच्चित संमिताणि (ब) 4 अंगुल (स) 2 अंगुल (द) स्वपाणितल
(87) शांरग्धर के अनुसार प्राण वायु का स्थान होता है।
(अ) हृदय (ब) मूर्धा (स) उरः (द) नाभि
(88) 'तैलबिन्दु मूत्र परीक्षा' का वर्णन किस आचार्य ने किया है।
(अ) योग रत्नाकर (ब) चक्रपाणि (स) शारंग्धर (द) डल्हण
(89) मूत्र में तैल बिन्दु डालते ही न फैलकर एक स्थान पर स्थिर रहे तब वह रोग होगा ?
(अ) साध्य रोग (ब) कष्टसाध्य रोग (स) याप्य रोग (द) असाध्य रोग
(90) हंस, पारावत सम – नाडी की गति होती है।
(अ) वात दोष में (ब) पित्त दोष में (स) कफ दोष में (द) सर्व दोष में
(91) सर्प, जलौका सम – नाडी की गति होती है।
(अ) वात दोष में (ब) पित्त दोष में (स) कफ दोष में (द) सर्व दोष में
(92) अम्लिका, पिपासा, परिदाह लक्षण है पित्त के ——— का
(अ) संचय (ब) प्रकोप (स) प्रसर (द) वृद्धि
(93) षडक्रियाकाल के कौनसे काल में व्याधि के पूर्वरूप प्रकट हो जाते है।
(अ) संचय (ब) प्रकोप (स) प्रसर (द) स्थानासंश्रय
(94) "विपरीत गुणै इच्छाः।" – षडक्रियाकाल के कौनसे काल का लक्षण है।
(अ) संचय (ब) प्रकोप (स) प्रसर (द) स्थानासंश्रय
(95) मणिपुर चक्र में दलों की संख्या होती है।
(अ) 4 (ब) 6 (स) 10 (द) 12
(96) दिवास्वप्न जन्य विकार है।
(अ) हलीमक (ब) गुरूगात्रता (स) इन्द्रिय विकार (द) उपयुर्क्त सभी
(97) 'यदा तू मनसि क्लान्ते कर्माव्मानः क्लमान्विताः। विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा ..... मानवः।
(अ) निद्रा भवति (ब) स्वपिति (स) स्वपनः (द) निद्रा
(98) चरकानुसार ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से किसका प्रकोप होता है।
(अ) कफ (ब) कफपित्त (स) त्रिदोष (द) वात

(99) कौनसी निद्रा व्याधि को निर्दिष्ट नहीं करती है।
(अ) श्लेष्मसमुद्भवा (ब) मनःशरीरश्रमसम्भवा (स) आगन्तुकी (द) तमोभवा
(100) त्रिदोष हेतु 'सर्वरोगाणां एककरणम्' किसका कथन है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) वाग्भट्ट (द) माधव
(101) कामशोक भयद्वायुः क्रोधात् पित्तम् लोभात् कफम्। – किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) हारीत (द) माधव
(102) भेल के अनुसार बृद्धिवैशेषिक आलोचक पित्त का स्थान होता है ?
(अ) हृदय (ब) मूर्धा (स) श्रृंगाटक (द) भ्रूमध्य
(103) वीर्यप्रधानमौषधद्रव्यं रसप्रधानमाहारद्रव्यश्च। – किस आचार्य ने कहा है।
(अ) चरक (ब) वाग्भट्ट (स) काश्यप (द) चक्रपाणि
(104) चरकानुसार ज्ञान–अज्ञान में कौनसा दोष उत्तरदायी होता है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) आम
(105) चरकानुसार 'नित्यग' है।
(अ) काल का भेद (ब) आयु का पर्याय (स) अ, ब दोनों (द) उपर्युक्त कोई नहीं
(106) चेष्टाप्रत्ययभूतं इन्द्रियाणाम् – किसका कर्म है।
(अ) वायु का (ब) मन का (स) आत्मा का (द) मस्तिष्क का
(107) वाग्भट्टानुसार पित्त के 7 गुणों एवं वात के 7 गुणों में से कितने गुण समान है।
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) उपर्युक्त कोई नहीं
(108) सुश्रुतानुसार 'उद्वहन' कौनसी वायु का कार्य है ?
(अ) प्राण वायु (ब) उदान वायु (स) समान वायु (द) व्यान वायु
(109) योगशास्त्र में स्वाधिष्ठान चक्र को किस वर्ण का माना गया है ?
(अ) लाल (ब) पीला (स) नारंगी (द) नीला
(110) चरकानुसार वर्णोत्पत्ति के संदर्भ में कौनसा कथन सत्य है।
(अ) तेजोधातुरप्युदकान्तरिक्षधातुप्रायो अवदातवर्णकरो भवति (ब) पृथिवीवायुधातुप्रायः कृष्णवर्णकरः
(स) समसर्वधातुप्रायः श्यामवर्णकरः (द) उपर्युक्त सभी
(111) चरकानुसार प्राकृत कफ है।
(अ) ओज (ब) शुक्र (स) स्वास्थ्य (द) उपर्युक्त सभी
(112) चरकानुसार अतिनिद्रा की चिकित्सा में निम्न में से किसका निर्देश किया है।
(अ) रक्तमोक्षण (ब) शिरोविरेचन (स) कायविरेचन (द) उपर्युक्त सभी
(113) अष्टांग संग्रह के अनुसार किस ऋतु में संशोधन का निषेध है ?
(अ) बर्षा (ब) ग्रीष्म (स) शीत (द) उपर्युक्त सभी
(114) सुश्रुतानुसार 'पैंगल्य' निम्न में से किस मानस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) ब्राह्म काय (ब) गान्धर्व काय (स) वरूण काय (द) याम्य काय
(115) सुश्रुतानुसार ''तीक्ष्णमायासिनं'' निम्न में से किस मानस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) प्रेत काय (ब) पिशाच काय (स) सर्प काय (द) आसुर काय
(116) 'परिनिश्चतवाक्यपदः' किस प्रकृति के पुरूष का लक्षण है।
(अ) वात (ब) पित्त (स) कफ (द) सम
(117) अष्टांग हृदय के अनुसार ''कृतेऽप्यकृतसंज्ञ'' किसका लक्षण है ?
(अ) मूत्रवृद्धि (ब) पुरीष वृद्धि (स) कफज अतिसार (द) अ, स दोनो
(118) रक्त की परिभाषा किस आचार्य ने बतलायी है ?
(अ) चरक (ब) सुश्रुत (स) हारीत (द) माधव
(119) ''त्वकशोष स्पर्शवैगुण्य'' किसका लक्षण है ?
(अ) रसक्षय (ब) स्वेदक्षय (स) कफक्षय (द) रक्तक्षय
(120) ''बलभ्रंश'' किसका लक्षण है ?
(अ) ओजक्षय (ब) ओजव्यापद् (स) ओजविस्त्रंस (द) साम दोष

Model Test Papers (Answer) – शरीर क्रिया विज्ञान					
1. A	21. B	41. C	61. B	81. C	101. D
2. C	22. A	42. B	62. D	82. D	102. C
3. A	23. C	43. B	63. C	83. A	103. D
4. C	24. D	44. B	64. B	84. B	104. C
5. C	25. C	45. A	65. C	85. C	105. C
6. C	26. D	46. B	66. A	86. A	106. B
7. C	27. A	47. B	67. B	87. D	107. A
8. B	28. B	48. C	68. A	88. A	108. B
9. D	29. C	49. A	69. C	89. B	109. B
10. A	30. B	50. D	70. D	90. C	110. D
11. C	31. B	51. A	71. C	91. A	111. A
12. C	32. C	52. A	72. B	92. B	112. D
13. A	33. D	53. D	73. B	93. D	113. D
14. B	34. D	54. C	74. B	94. A	114. C
15. C	35. D	55. D	75. B	95. C	115. D
16. A	36. D	56. D	76. D	96. D	116. C
17. C	37. C	57. A	77. B	97. B	117. D
18. C	38. B	58. A	78. D	98. B	118. B
19. B	39. C	59. B	79. B	99. D	119. B
20. D	40. B	60. B	80. B	100. C	120. D